

वीर संवत २४८२, मछा वढ ६, शुक्रवार  
ता. ११-२-१८६६, गाथा १, २. प्रवचन नं०२-२३

‘दौलतरामञ्ज’ कृत ‘७ ढाला’ है. यौथी ढाल चलती है. ‘सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान में अंतर.’ पढले क्या कछा ? प्रथम में प्रथम तो सम्यग्दर्शन प्रगट करना याछिये. सम्यग्दर्शन के बिना सम्यग्ज्ञान छोता नहीं और सम्यग्ज्ञान बिना व्रत, तप, यारित्र सख्या छोता छी नहीं, जूठ छोता है.

मुमुक्षु :- जूठ तो जूठ है तो सछी न ?

उत्तर :- जूठ है. जूठ में आत्मा को क्या लाभ है ? वछ तो कछा. सम्यग्दर्शन बिना ज्ञान, यारित्र मिथ्या है, वछ तो पढले कछा. वछ श्लोक आ गया ना ? कछां आया था ? अंतिम आया ना ?

भोक्षमडल की परथम सीढी, या बिन ज्ञान यारित्रा;  
सम्यक्ता न लहें, सो दर्शन, धारो लव्य पवित्रा.

वछ साढी छिन्दी भाषा में है. ‘दौलतरामञ्ज’ बडे पंडित छो गये हैं. कछते हैं कि, जिसे भोक्ष याछिये उसकी बात है. जिसे संसार याछिये, पुण्य-पाप का बंध और पुण्य-पाप का इल (याछिये तो) वछ बात तो छमारे पास नहीं है. वछ बात तो अनादिकाल से करते आये हैं. पुण्य-पाप करता है और पुण्य-पाप का इल यार गति में लोगतते हैं. वछ तो अनादिकाल की बात है. वछ कोई नवीन, अपूर्व बात नहीं. जिसे आत्मा की परमानंद दशा ऐसे भोक्ष की अलिलाषा है, ऐसे भोक्षमडल की प्रथम सीढी सम्यग्दर्शन है. सम्यग्दर्शन बिना सब ज्ञान, व्रत, तप, यारित्र आदि करे वछ सब मिथ्या हैं, सख्या नहीं है, उससे आत्मा का कोई कल्याण नहीं है.

कछा कि, ‘या बिन ज्ञान यारित्रा; सम्यक्ता न लहें,’ है ना ? सम्यक् आत्मा का लान अेक सेकंड के असंध्य लाग में आत्मा निर्विकल्प आनंदकंद शुद्ध है. वछ अपने से, कोई दूसरे से प्राप्ति छोती नहीं. शास्त्र से प्राप्ति नहीं छोती, गुरु

से प्राप्ति नहीं होती, तीर्थंकर से प्राप्ति नहीं होती. ऐसी चीज है. अपना निज स्वरूप.. वह तो पहले तीसरी ढाल में कड़ा ना ? आत्मा पर का तो लक्ष्य छोड़ तो लेकिन अपने में जो पुण्य-पाप का भाव होता है, शुभ-अशुभ, दया, दान, काम, क्रोध (का) शुभाशुभभाव की भी रूचि, लक्ष्य छोड़ दे और अपना आत्मा अनंत गुणस्वरूप और मैं गुणी और अनंत गुण मेरे में हैं, ऐसा भेद का विकल्प भी छोड़ दे. समझ में आया ?

भगवान् आत्मा ! भाई ! यह अपूर्व बात है. अनंतकाल में उसने किया नहीं. कभी सुनी नहीं और कभी किया नहीं. परियय किया नहीं, आदत की नहीं, अभ्यास किया नहीं, अनुभव तो किया (है ही) नहीं. ऐसा भगवान् आत्मा अपना निज आत्मा. पहले कड़ा था ना ? समझे ? दोपहर में 'परमात्म प्रकाश' में भी आया था. निज शुद्धात्मा. अनंत अनंत शांतरस से भरा आत्मा, उसको गुण और गुणी (अर्थात्) मैं आत्मा गुणी हूँ-गुण का धरनेवाला (हूँ) और ज्ञान, दर्शन, आनंद मेरे में गुण हैं, ऐसा भेद का विकल्प भी जहां काम नहीं करता. ऐसा भेद का विकल्प है वह भी राग है. तो दूसरे तो उसमें कहां काम आते हैं ? समझ में आया ?

कहते हैं कि, ऐसे आत्मा में प्रथम में प्रथम मोक्ष की पहली सीढ़ी, अंतर्मुख आत्मा में सम्यग्दर्शन प्रगट करके बाद में सम्यग्ज्ञान का आराधन करना. ऐसा यहां 'दौलतरामजी' '७ ढाणा' में प्रथम सम्यग्दर्शन की बात करके सम्यग्ज्ञान की बात करते हैं. यह तो सादी भाषा है.

मुमुक्षु :- ...

उत्तर :- आये न आये उसका कुछ नहीं. २२ दिन (गुजराती में) यला अब थोड़ा यह भी यले ना ? उन्हीं ने छिन्दी में कड़ा था, भाई ने तो पूरा छिन्दी में (लेने को) कड़ा था. अब थोड़ा यलने दो, कैसा यलता है देजो तो सही. समझ में आता है ?

मुमुक्षु :- जब सूक्ष्म बात आयेगी तो बढ़ेंगे.

उत्तर :- वह कैसे मालूम पड़े कैसा होगा ?

સમ્યગ્દર્શન અને સમ્યગ્જ્ઞાનમાં તફાવત

(રોલા છંદ)

સમ્યક્ સાથે જ્ઞાન હોય, પૈ ભિન્ન અરાધી;  
લક્ષણ શ્રદ્ધા જાન, દુહૂર્મે ભેદ અબાધી.  
સમ્યક્ કારણ જાન, જ્ઞાન કારજ હૈ સોઈ;  
યુગપત્ હોતે હૂં પ્રકાશ દીપકતૈં હોઈ. ૨.

અન્વયાર્થ :- (સમ્યક્ સાથે) સમ્યગ્દર્શનની સાથે (જ્ઞાન) સમ્યગ્જ્ઞાન (હોય) હોય છે (પૈ) તોપણ [તે બન્ને] (ભિન્ન) જુદાં (અરાધી) સમજવાં જોઈએ; કારણ કે (લક્ષણ) તે બન્નેનાં લક્ષણ [અનુક્રમે] (શ્રદ્ધા) શ્રદ્ધા કરવી અને (જાન) જાણવું છે તથા (સમ્યક્) સમ્યગ્દર્શન (કારણ) કારણ છે અને (જ્ઞાન) સમ્યગ્જ્ઞાન (કારજ) કાર્ય (હૈ) છે (જાન) એમ જાણો. (સોઈ) આ પણ (દુહૂર્મે) બન્નેમાં (ભેદ) અંતર (અબાધી) નિર્બાધ છે. [જેમ] (યુગપત્) એક સાથે (હોતે હૂં) હોવા છતાં પણ (પ્રકાશ) અજવાળું (દીપકતૈં) દીપકની જ્યોતિથી (હોઈ) થાય છે તેમ.

ભાવાર્થ :- સમ્યગ્દર્શન અને સમ્યગ્જ્ઞાન જોકે એકસાથે પ્રગટે છે તોપણ તે બન્ને જુદા જુદા ગુણના પર્યાયો છે. સમ્યગ્દર્શન શ્રદ્ધાગુણનો શુદ્ધપર્યાય છે, અને સમ્યગ્જ્ઞાન જ્ઞાનગુણનો શુદ્ધપર્યાય છે, વળી સમ્યગ્દર્શનનું લક્ષણ વિપરીત અભિપ્રાય રહિત તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાન છે અને સમ્યગ્જ્ઞાનનું લક્ષણ સંશય આદિ દોષ રહિત સ્વ-પરનો યથાર્થપણે નિર્ણય છે.- એ રીતે બેઉનાં લક્ષણ જુદાં જુદાં છે. વળી સમ્યગ્દર્શન નિમિત્તકારણ છે અને સમ્યગ્જ્ઞાન નૈમિત્તિક કાર્ય છે. આમ તે બંનેમાં કારણ-કાર્યભાવથી પણ તફાવત છે.

પ્રશ્ન :- જ્ઞાન-શ્રદ્ધાન તો યુગપત્ (એકસાથે) હોય છે, તો તેમાં કારણ-કાર્યપણું કેમ કહી શકીએ ?

ઉત્તર :- ‘એ હોય તો એ હોય’ એ અપેક્ષાએ કારણ-કાર્યપણું હોય છે. જેમ દીપક અને પ્રકાશ બંને યુગપત્ હોય છે, તોપણ દીપક હોય તો પ્રકાશ હોય; તેથી

દીપક કારણ છે અને પ્રકાશ કાર્ય છે. એ જ પ્રમાણે જ્ઞાન-શ્રદ્ધાન પણ છે.

(મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશક પા.૮૧.)

જ્યાં સુધી સમ્યગ્દર્શન થતું નથી ત્યાં સુધીનું જ્ઞાન સમ્યગ્જ્ઞાન કહેવાતું નથી. આમ હોવાથી સમ્યગ્દર્શન તે સમ્યગ્જ્ઞાનનું કારણ છે.\*

વહાં તો કહતે હૈં કિ, ‘સમ્યગ્દર્શન ઓર સમ્યગ્જ્ઞાન મેં અંતર.’ પહલે મેં પહલે સમ્યગ્દર્શન. અપને સ્વભાવ મેં અનુભવ મેં પ્રતીત કરની વહ પહલી સીઢી, ધર્મ કી પહલી રુચિ, વહ પહલી શુરૂઆત હોતી હૈ, વહાં સે ધર્મ કી શુરૂઆત હોતી હૈ. બાદ મેં સમ્યગ્જ્ઞાન કા અંતર આરાધન કરના, ઐસા ‘અમૃતચંદ્રાચાર્ય’ ભી ‘પુરુષાર્થસિદ્ધિપાથ’ મેં કહતે હૈં. નીચે શ્લોક દિયા હૈ.

સમ્યક્ સાથૈ જ્ઞાન હોય, પૈ ભિન્ન અરાધૌ;  
લક્ષણ શ્રદ્ધા જાન, દુહૂમે ભેદ અબાધૌ.  
સમ્યક્ કારણ જાન, જ્ઞાન કારજ હૈ સોઈ;  
યુગપત્ હોતે હૂ, પ્રકાશ દીપકતૈ હોઈ. ૨.

‘સમ્યક્ સાથૈ જ્ઞાન હોય, પૈ ભિન્ન અરાધૌ;’ હૈ ? દૂસરા શ્લોક હૈ. કોઈ મેં પહલા લિખા હૈ, કોઈ મેં દૂસરા હૈ. કયા કહતે હૈં ? દેખો ! શબ્દાર્થ. ‘સમ્યગ્દર્શન કે સાથ

\* સંશય, વિમોહ, (વિભ્રમ-વિપર્યય) અનિર્ધાર.

૧. પૃથગારાધનમિષ્ટં દર્શનસહભાવિનોઽપિ બોધસ્ય ।  
લક્ષણભેદેન યતો નાનાત્વં સંભવત્યનયોઃ ॥૩૨॥
૨. સમ્યગ્જ્ઞાન કાર્ય સમ્યક્ત્વં કારણં વદન્તિ જિનાઃ ।  
જ્ઞાનારાધનમિષ્ટં સમ્યક્ત્વાનન્તરં તસ્માત્ ॥૩૩॥  
કારણકાર્યવિધાનં સમકાલં જાયમાનયોરપિ હિ ।  
દીપપ્રકાશયોચિ સમ્યક્ત્વજ્ઞાનયોઃ સુઘટમ્ ॥૩૪॥

(શ્રી અમૃતચંદ્રાચાર્ય રચિત પુરુષાર્થસિદ્ધિ ઉપાય)

सम्यग्ज्ञान होता है।' ज्ञान आगे-पीछे होता नहीं. आत्मा, अपना शुद्ध परमानंदमूर्ति आत्मा, उसका अंतर भान, पहले सम्यक् हुआ उसके साथ ही उसका सम्यग्ज्ञान का किरण साथ ही होता है, प्रगट होता है. समज में आया ? उसके साथ यारित्र नहीं होता. स्वरूपायरण होता है, लेकिन यारित्र जो संयम आदि है वह आगे बढ़कर बहुत पुरुषार्थ करते हैं बाद में बढ़ते हैं. पहले सम्यग्दर्शन के साथ तो सम्यग्ज्ञान तो होता ही है.

'तथापि (उन दोनों को) त्मिन्न त्मिन्न समजना याडिये;...' देओ! भगवानआत्मा, उसकी ज्ञान करके प्रतीत (करनी), जहां सामान्यज्ञान की बात चलती हो तो पहले ज्ञान आता है और सम्यग्दर्शन-ज्ञान की बात चलती है तो पहले सम्यग्दर्शन होता है. समज में आया ? अपने सम्यग्दर्शन हुआ तो बाद में ज्ञान का आराधन करो. क्योंकि 'उन दोनों के लक्षण...' श्रद्धा करना और जानना-ये दो लक्षण त्मिन्न हैं. अपना निज स्वरूप (उसकी) शुद्ध श्रद्धा-प्रतीत करनी वह श्रद्धा लक्षणवाला सम्यग्दर्शन है. ज्ञान करना वह जानपना लक्षणवाला है. दोनों के लक्षण त्मिन्न हैं. समज में आया ? क्योंकि दो गुण की दो पर्याय हैं. सम्यग्दर्शन श्रद्धागुण की पर्याय है और सम्यग्ज्ञान ज्ञानगुण की निर्मल पर्याय है. दो पर्याय त्मिन्न हैं. दो गुण त्मिन्न हैं तो दो पर्याय त्मिन्न हैं. 'उन दोनों का लक्षण श्रद्धा करना और जानना है...' जानना किसका ? निज स्वरूप का. उसमें विशेष ज्ञान का अभ्यास चलेगा.

'तथा सम्यग्दर्शन कारण है और सम्यग्ज्ञान कार्य है.' जब सम्यग्दर्शन प्रगट हो तो सम्यग्दर्शन कारण है और अपना सम्यग्ज्ञान कार्य है. एक समय में साथ में उत्पन्न होता है. फिर भी उनमें कारण-कार्य का एक समय में भी भेद कड़ने में आता है. समज में आया ? आडा...डा...! 'सम्यग्दर्शन कारण है और सम्यग्ज्ञान कार्य है.' उसका अर्थ अपना निजानंद प्रभु, उसकी अंतर में अनुभव में प्रतीत नहीं हुई तो उसे ज्ञान होता नहीं. प्रतीत आयी तो बाद में साथ में ज्ञान उत्पन्न हुआ उसे कार्य कड़ने में आता है. किसका कार्य ? सम्यग्दर्शन का कार्य. आत्मा का कार्य नहीं ? अ...! क्या कड़ते हैं समज में आया ?

आत्मा... है तो सम्यग्दर्शन एक कार्य और सम्यग्ज्ञान भी कार्य है. किसका (कार्य

है) ? आत्मा का. देह, वाणी, मन, जड त्मिन्न, कर्म त्मिन्न-जुद्ध, पुण्य-पाप का भाव होता है वह भी विकार त्मिन्न है. भगवान् आत्मा शुद्ध ज्ञानानंद की प्रतीत (हुँई) वह है तो आत्मा का कार्य, पर्याय है इसलिये. और साथ में सम्यग्ज्ञान हुआ-निज का बोध हुआ कि, आत्मा अनंत गुणमय है, शुद्ध है, निर्मल है. समज में आया ? यह ज्ञान, है तो आत्मा का वर्तमान कार्य लेकिन दो पर्याय के बीच में सम्यग्दर्शन कारण है और सम्यग्ज्ञान कार्य है. सम्यग्दर्शन पर्याय है. समज में आया ? यह सूक्ष्म नहीं आया ?

आत्मा... अरे..! आत्मा क्या चीज है ? उसकी जबर नहीं. अनंतकाल में उसने उसको जाने बिना सब किया. कोटि जन्म तप किया, भक्ति की, पूजा की, दान-दया अनंत बार किये, उसमें कुछ आत्मा का लाभ हुआ नहीं. पुण्यबंध हो जाये, स्वर्गादि मिल जाये (और) चार गति में रजडे.

मुमुक्षु :- पूजा करे और चार गति में रजडे ?

उत्तर :- शुभभाव है ना ? पुण्यबंध होता है. आत्मदर्शन, आत्मज्ञान बिना उसे मात्र पुण्यबंध होता है. मिथ्यादृष्टि तो साथ में है, सम्यग्दर्शन तो है नहीं. समज में आया ? बात तो ऐसी है, भैया ! सूक्ष्म है. पहले आ गया ना ? आगे थोडा आयेगा. कोटि जन्म तप तपे तो भी आत्मा का लाभ होता नहीं. सम्यग्दर्शन बिना, आत्मा क्या चीज है उसके अनुभव बिना, किसमें स्थिर होना ? उस चीज का पत्ता लगने बिना चारित्र आया कहां से ? समज में आया ? बाहर की किया तो शुभ विकल्प है. दया, दान, व्रत, भक्ति आदि शुभभाव तो शुभराग है, पुण्य है. लेकिन आत्मदर्शन नहीं है तो पुण्य का फल क्या ? मिथ्यात्व सद्धित पुण्य का फल स्वर्ग आदि मिलेंगे. जन्म-मरण का नाश तीनकाल तीनलोक में नहीं होगा, ऐसा कहते हैं. ये क्या कहते हैं ? 'दौलतरामञ्ज' कहते हैं. समज में आया ?

मुमुक्षु :- मंद मिथ्याय होता है न ?

उत्तर :- मंद मिथ्यात्व होता है, उसका अर्थ क्या ? अभाव नहीं होता. मंद-तीव्र तो कर्म है, अनादि की चीज है, अनादि की चाल है. द्विगंबर जैन साधु होकर नौवीं श्रैवेयक अनंतबार गया, मिथ्यादृष्टि, हां ! मंद मिथ्यात्व था, अनंतानुबंधी

कषाय ली मंद था, नहीं तो उपर (के स्वर्ग में) जाये नहीं. (अनंतानुबंधी का) अभाव नहीं (हुआ था). आत्मा के दर्शन बिना मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी का अभाव नहीं होता. बहुत (सूक्ष्म) बात (है). समझ में आया ?

वह कहते हैं, ज्ञान, अपने शुद्ध स्वरूप की प्रतीत, भान, दर्शन हुआ तो वह आत्मा का ही कार्य है. लेकिन सम्यग्दर्शन के साथ सम्यग्ज्ञान होता है, उन दोनों के बीच सम्यग्दर्शन कारण (है) और सम्यग्ज्ञान कार्य (है). समझ में आया ? अंतर की चीज बिना बाह्य से आत्मा में कुछ लाभ होता नहीं. यह कहते हैं. 'सम्यग्ज्ञान कार्य है. यह ली दोनों में अन्तर निर्बाध है.' अंतर दो प्रकार का कडा. कौन-से दो प्रकार ? एक तो सम्यग्दर्शन लक्षण श्रद्धा है, सम्यग्ज्ञान का लक्षण जानना है. ये दो भेद हुआ. और दूसरा-सम्यग्दर्शन कारण है, सम्यग्ज्ञान कार्य है. ये दूसरा भेद हुआ. समझ में आया ? आडा...! 'अन्तर निर्बाध है.' दोनों में अंतर निर्बाध है, दोनों में निश्चित ही अंतर है. समझ में आया ? निर्बाध है कि नहीं ?

'(जिसप्रकार) (युगपत्) अकसाथ होने पर ली...' दृष्टांत देते हैं. वह 'अमृतयंद्राचार्यदेव' का दृष्टांत है. ८०० वर्ष पहले द्विगंबर संत 'अमृतयंद्राचार्यदेव' हुआ. इस ओर टीका है. उसमें है, श्लोक है, उ२-उ३-उ४ श्लोक है. नीचे संस्कृत है वह 'अमृतयंद्राचार्यदेव' का है, 'पुरुषार्थसिद्धयुपाय'. 'कुंडकुंदाचार्य' महाराज के शास्त्र की जो टीका बनाई है (वे) 'अमृतयंद्राचार्यदेव' द्विगंबर संत वनवासी जंगलवासी थे, उनके 'पुरुषार्थसिद्धयुपाय' में वह श्लोक है. पहले (सम्यक्) दर्शन का आराधन होने के बाद सम्यग्ज्ञान का आराधन करना. समझ में आया ? उसमें कारण-कार्य का दृष्टांत है. देओ ! उ४ (गाथा में) है.

कारणकार्यविधानं समकालं जायमानयोरपि हि ।

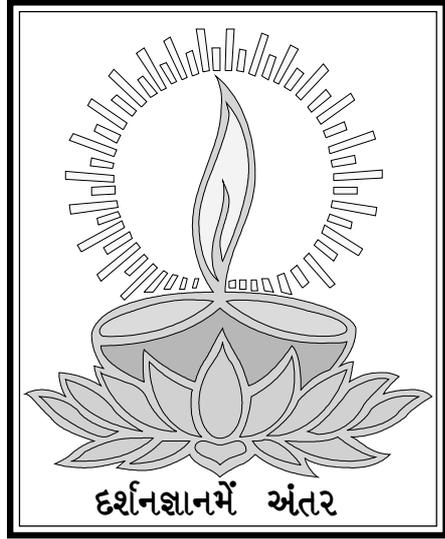
दीपप्रकाशयोखि सम्यक्त्वज्ञानयोः सुघटम् ॥३४॥

उ४ (गाथा में) है. 'उजाला दीपक की ज्योति से होता है उसीप्रकार.' देओ ! दीपक कारण है और उजाला कार्य है. है साथ में. दीपक और उजाला है साथ में लेकिन दीपक कारण है, उजाला-प्रकाश कार्य है. अकसाथ में दोनों कारण-कार्य रहते हैं. समझ में आया ? पूर्व की पर्याय को कारण कहते हैं, पीछे की पर्याय

કો કાર્ય કહતે હૈં. ઐસા ભી હૈ ઔર વર્તમાન ભી દર્શન કારણ, સમ્યગ્જ્ઞાન કાર્ય, ઐસા યુગપદ્ધ કારણ-કાર્ય ભી હૈ. વીતરાગ કી શૈલી સમજની ચાહિયે. સમજ મેં આયા ?

મુમુક્ષુ :- ... પ્રકાશને કારણ અને દીપકને કાર્ય કીધું....

ઉત્તર :- નહીં, નહીં, નહીં. પ્રકાશ કારણ ઔર દીપક કાર્ય, ઐસા નહીં. સાથ મેં હૈ ફિર ભી દીપક મુખ્ય વસ્તુ હૈ. (દીપક) હો તો (પ્રકાશ) હોતા હૈ. દીપક હો તો પ્રકાશ હોતા હૈ. પ્રકાશ હો તો દીપક હૈ, ઐસા નહીં. દીપક હૈ તો પ્રકાશ હૈ. આગે લેંગે. સમજ મેં આયા ? દીપક બિના પ્રકાશ કેસા ? પ્રકાશ હૈ, દીપક નહીં ! સાથ મેં હૈ ફિર ભી દીપક હૈ તો પ્રકાશ હૈ, ઐસા હૈ. કારણપના દીપક મેં હૈ. સમજ મેં આયા ?



ઐસે ખાસ કારણપના સમ્યગ્દર્શન મેં હૈ. ખાસ કારણ-સમ્યગ્દર્શન. અખંડ પૂર્ણાનંદ પ્રભુ કી અંતર મેં વિકલ્પરહિત શ્રદ્ધા હોના વહ દર્શન હૈ તો જ્ઞાન કાર્ય કહને મેં આતા હૈ. આહા..હા...! યુગપદ્ધ સાથ મેં હોને પર ભી, કારણ-કાર્ય સાથ મેં ભી હોતા હૈ. સમજ મેં આયા ? એકાંતી અજ્ઞાની તો કારણ-કાર્ય સાથ મેં માનતા નહીં, એકાંત માનતા હૈ (કિ), સાથ મેં નહીં, આગે-પીછે હોતા હૈ. આગે-પીછે એકાંત માનના ઔર સાથ મેં નહીં માનના, એકાંત સાથ મેં માનના ઔર આગે-પીછે નહીં માનના. પૂર્વ કી પર્યાય કારણ ઔર ઉત્તર પર્યાય કાર્ય, ઐસા ભી શાસ્ત્ર મેં (આતા) હૈ. સમજ મેં આયા ?

જ્ઞાન કે ત્રીન ભેદ-દોષ હૈં ના ? કારણ વિપર્યાસ, ભેદાભેદ વિપર્યાસ, સ્વરૂપ વિપર્યાસ. યે ત્રીન દોષ અજ્ઞાન મેં હૈ. અજ્ઞાની જાનતા તો હૈ કિ, આત્મા હૈ. લેકિન ઉસકે કારણ મેં વિપર્યાસ હોતા હૈ કિ, આત્મા કા કર્તા કોઈ ઈશ્વર હૈ યા સર્વવ્યાપક કોઈ બ્રહ્મ હૈ. સમજ મેં આયા ? ઐસા માનનેવાલા કારણવિપર્યાસ મેં મિથ્યાદષ્ટિ

હે, વહ આત્મા કો માનતા નહીં. સમજ મેં આયા ? આત્મા માને લેકિન આત્મા કા કારણ ઐસા માને કિ, કોઈ ઈશ્વર (કારણ હે) યા સર્વવ્યાપક બ્રહ્મ હે. ઐસા માનનેવાલા કારણ વિપર્યાસ મિથ્યાદષ્ટિ હે. ઉસકા જ્ઞાન મિથ્યાજ્ઞાન હે. સમજ મેં આયા ?

ભેદાભેદ વિપર્યાસ આતા હે. જગત મેં કોઈ બ્રહ્મ હે ઉસકે સાથ આત્મા અભેદ હે, ઐસા માનના વહ મિથ્યાત્વ હે. સમજ મેં આયા ? આત્મા મેં સર્વથા ગુણ-ગુણી ભેદ હે. સર્વથા ભેદ હે, ઐસા માનના ભી મિથ્યાજ્ઞાન હે. જ્ઞાન કે બહુત ભેદ હે, લેકિન જિસે સમજને કી જરૂરત લગી હો ઉસકી બાત હે કિ નહીં ? સમજ મેં આયા ? અનાદિકાલ સે મિથ્યાજ્ઞાન મેં ભી ભૂલ હે. સમજ મેં આયા ?

‘ટોડરમલ્લજી’ને ‘મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશક’ મેં કહા હે કિ, મિથ્યાદર્શન હે તો મિથ્યાજ્ઞાન હે. દર્શન કે કારણ હી મિથ્યાજ્ઞાન હુઆ, ઉસમેં જ્ઞાન મેં કયા દોષ આયા ? સમજ મેં આયા ? તો કહા કિ, અપના પ્રયોજન સિદ્ધ કરના હે ઉસકા તો જ્ઞાન કરતા નહીં ઔર વહ જ્ઞાન અપ્રયોજનભૂત બાત કા જ્ઞાન કરતા હે. અપના પ્રયોજન સિદ્ધ હોતા હે ઐસા જ્ઞાન, આત્મા કા (ઔર) જડ કા ભેદજ્ઞાન તો કરતા નહીં ઔર વહ જ્ઞાન અપ્રયોજનભૂત સબ બાત (જાનતા હે). કથા-વાર્તા, શાસ્ત્ર કી બાત કા જ્ઞાન કર લે, અપ્રયોજન કો જાને ઔર પ્રયોજન કો નહીં જાને વહી જ્ઞાન કા દોષ હે. સમજ મેં આયા ? વાસ્તવિક આત્મા ઔર જડ સે ભિન્ન કયા ચીજ હે, ઉસકો તો જ્ઞાન જાને નહીં ઔર જ્ઞાન દૂસરી બાત બહુત જાને. વાર્તા, કથા, શાસ્ત્ર, જગત કે અનેક પ્રકાર (જાને). વહ તો અપ્રયોજનભૂત હે. ઉસમેં કોઈ આત્મા કી સિદ્ધિ હે નહીં. સમજ મેં આયા ? વહ કહતે હે, દેખો ! સમ્યગ્જ્ઞાન ભિન્ન હે. ઉસકા વિપર્યાસ-વિપરીત કારણ રહિત, ભેદાભેદ રહિત, સ્વરૂપ વિપર્યાસ રહિત જો જ્ઞાન હોતા હે ઉસે સમ્યગ્દર્શન સહિત સમ્યગ્જ્ઞાન કહને મેં આતા હે.

ભાવાર્થ :- ‘સમ્યગ્દર્શન ઔર સમ્યગ્જ્ઞાન યદપિ...’ યદપિ એટલે જોકે. ‘એકસાથ પ્રગટ હોતે હેં...’ પ્રગટ તો એકસાથ હોતે હેં. ભાવાર્થ હે ના ? ભાવાર્થ. ઇસ ઓર હે. ૯૪ પન્ના હે. ‘સમ્યગ્દર્શન ઔર સમ્યગ્જ્ઞાન યદપિ એકસાથ હી પ્રગટ હોતે હેં...’ અંતર આત્મભાન હોને કે સમય દર્શન-જ્ઞાન એકસાથ (પ્રગટ હોતે હેં). ‘તથાપિ

वे दोनों भिन्न भिन्न गुणों की पर्यायें हैं।' गुण की पर्याय, ये सब कहां सीजना ?

आत्मा में दर्शनगुण—श्रद्धागुण त्रिकाल है और ज्ञानगुण त्रिकाल है. दो गुण हैं, जैसे अनंत गुण हैं. अकेला आत्मा आत्मा करे, जैसे नहीं चलता. अनंत गुण हैं उसमें एक श्रद्धागुण है, एक ज्ञानगुण है. सम्यग्दर्शन श्रद्धागुण की सखी पर्याय है और ज्ञानगुण की सम्यग्ज्ञान सत्य पर्याय है. दो गुण की दो पर्याय हैं, दोनों भिन्न हैं. पर्याय जाननी नहीं, गुण जानना नहीं और आत्मा का ज्ञान हो जाये, जैसे नहीं होता, ऐसा कहते हैं.

सम्यग्दर्शन श्रद्धागुण की शुद्ध पर्याय है. समज में आया ? आत्मा है उसमें श्रद्धागुण त्रिकाल है, श्रद्धागुण त्रिकाल है. उसमें पुण्य से धर्म होता है, पाप में भजा आती है, देह की क्रिया में कर सकता हूँ, सुख आत्मा में नहीं, पर में है ऐसी विपरीत मान्यता है, वह त्रिकाल श्रद्धागुण की विपरीत पर्याय है, अशुद्ध पर्याय है. कछो, समज में आया ? और सम्यग्दर्शन की पर्याय जो सखी पर्याय है वह श्रद्धागुण की शुद्ध पर्याय है. समज में आया ? वह पर्याय है, गुण नहीं. गुण तो त्रिकाल है.

भुमुक्षु :- अशुद्ध सम्यग्दर्शन....

उत्तर :- अशुद्ध सम्यग्दर्शन का किसने कहा ?

श्रद्धागुण आत्मा में त्रिकाल है. आत्मा त्रिकाल है जैसे गुण भी त्रिकाल है. उसकी मिथ्यापर्याय जो श्रद्धा होती है (अर्थात्) राग से मुझे धर्म होगा, परमार्थ धर्म—निश्चय आत्मा का धर्म (होगा), पर से मेरा कल्याण होगा, मेरे से पर का कल्याण होगा ऐसी मान्यता. आत्मा में सुख नहीं लेकिन पर में सुख है, राग, धूल में—पैसे में, पर में सुख है ऐसी अंतर मान्यता जो है, यह मान्यता आत्मा के श्रद्धागुण की विपरीत पर्याय, अशुद्ध पर्याय है, भविन पर्याय है, दुःखरूप दशा है. अब आगे शुद्ध पर्याय कहते हैं.

'सम्यग्दर्शन श्रद्धागुण की शुद्धपर्याय है...' सम्यग्दर्शन क्या है ? आत्मा त्रिकाल है. श्रद्धागुण भी त्रिकाल है. उसकी वर्तमान क्षणिक एक समय की श्रद्धागुण की

सम्यक्-सत्य शुद्ध पर्याय है वह सम्यग्दर्शन है। सम्यग्दर्शन शुद्ध दशा है, शुद्ध अवस्था है, पवित्र दशा है, निर्मल दशा है, आनंद दशा के साथ पर्याय प्रगट होती है। आडा..डा...! कछो, समज में आया ? क्या कछा ? पडवे जैसे नहीं कछा।

मुमुक्षु :- आम करे तो आम ने आम करे तो आम आमां मेण न बेठी।

उत्तर :- इसमें तो अमेद कछना है इसलिये विस्तार नहीं आया। पडवे तो मेद कछना था ना ? (इसलिये विस्तार आया था)।

आत्मा वस्तु.. वस्तु अनादिअनंत (है)। उसमें श्रद्धागुण ली अनादिअनंत है। उसका अंतर में अनुभव करके, रागरहित छोकर. राग है सखी, संयोग है, कर्म है, निमित्त है, उसकी दृष्टि उटाकर अपने आत्मा में अकूप अमेद श्रद्धा करना, अमेद आत्मा की अंतर निर्विकल्प श्रद्धा करनी वह श्रद्धागुण की शुद्ध पर्याय, प्रगट पर्याय को शुद्ध कछते हैं, वहां से मोक्ष का मार्ग शुरू होता है। कछो, समज में आया ? श्रद्धा ऐसा मानती है कि, मैं परिपूर्णा हूं मेरे में आनंद है। ठीक ! सम्यग्दर्शन की पर्याय ऐसा मानती है। यह तो ज्ञान के साथ की बात है। मैं परिपूर्णा हूं उसमें तो ज्ञान आ जाता है। मैं परिपूर्णा हूं मैं शुद्ध हूं अमेद हूं अक हूं ऐसी श्रद्धागुण की पर्याय सारे आत्मा को भूतार्थ अक स्वभाव को मानती है। आडाडा..! कठिन बात है, भाई ! मूल बात ही (रही नहीं), अक अंक के बिना की सत्मी बातें, अक क्या है उसे भूल गये। जो अनंतकाल में प्रगट नहीं किया और जो प्रगट करने से ही जन्म-मरण का नाश होता है ऐसा सम्यग्दर्शन उसको कछते हैं।

क्या सम्यग्दर्शन की पर्याय परसन्मुख की प्रतीत करने से होती है ? सम्यग्दर्शन शुद्ध पर्याय है। किसकी ? आत्मा की। और श्रद्धागुण किसका है ? आत्मा का। आत्मा का श्रद्धागुण और आत्मा के सन्मुख की पर्याय बिना सम्यग्दर्शन की पर्याय कहां से होती है ? समज में आया ? क्या कछा ? श्रद्धा और आत्मा। आत्मा वस्तु और श्रद्धागुण। वह तो अपना निज स्वरूप है। अपना निज स्वरूप है उसके सन्मुख दृष्टि हुअे बिना उसकी श्रद्धा और उसके ज्ञान की शुद्ध पर्याय कहां से होगी ?

जिसमें शुद्ध श्रद्धा शक्ति पडी है और शुद्ध द्रव्य है, उसकी अंतर प्रतीत किये

बिना शुद्ध पर्याय कहां से होगी ? क्या रागमें से आती है ? निमित्तमें से आती है ? परमें से आती है ? पर में श्रद्धागुण है ? आत्मा का श्रद्धागुण राग में है ? आत्मा का श्रद्धागुण निमित्त में है ? आत्मा का श्रद्धागुण देव-गुरु-शास्त्र में है ? आत्मा का श्रद्धागुण क्या मंदिर में है ? आत्मा का श्रद्धागुण क्या 'समेदशीभर' में है ? कहां है ? कड़ते हैं कि, भगवान् आत्मा, जिसमें श्रद्धागुण त्रिकाल ध्रुव पडा है, उसकी ओर अंतर सन्मुख होकर, है उसमें से पर्याय प्रगट हो, उसका नाम श्रद्धागुण की शुद्ध पर्याय कड़ने में आती है. आहा..हा...!

अरे...! उसके निजघर की बात कभी सुनी नहीं. परघर की बात अनादिकाल से (सुनी है). यहां तो परमेश्वर सर्वज्ञदेव त्रिलोकनाथ वीतराग समवसरण में सौ एन्द्रों की उपस्थिति में भगवान् की दिव्यध्वनि आती थी. अरे...! आत्मा ! वही यहां संतों कड़ते हैं, उसी परंपरा से 'दौलतरामञ्ज' ने ढाल बनाई है. घर की कल्पना से नहीं बनाया. भगवान् त्रिलोकनाथ परमेश्वर सर्वज्ञदेव जिनको अक सेकंड के असंख्य भाग में तीनकाल तीनलोक जानने में आये, जैसे परमेश्वर के मुख से दिव्यध्वनि निकली. दिव्यध्वनि. दिव्य यानी प्रधान आवाज. ॐ आवाज निकला.

सौ एन्द्रों की उपस्थिति में (निकली). शकेन्द्र, एशानेन्द्र आदि स्वर्ग के एन्द्र भी उपस्थित थे. गणधर-संतों के नायक गणधर की उपस्थिति में भगवान् की वाणी में ऐसा आया. समज में आया ? कि, तेरी सम्यग्दर्शन की पर्याय कहां से आती है ? किस जान में पडी है ? क्या राग-विकल्प उठते है उसमें गुण है कि उसमें से पर्याय आती है ? शरीर में श्रद्धागुण है कि उसमें से पर्याय आती है ? श्रद्धागुण का सम्यक् परिणामन (होना) उसका नाम शुद्ध पर्याय सम्यग्दर्शन है. आहा..हा...! समज में आया कि नहीं ? आ..हा...! बडी सूक्ष्म बात है.

जिसमें पडा है, कोठी में अनाज पडा हो तो कोठीमें से निकले. ખाली हो तो कहां से निकले ? कुओं में... आप के यहां कहां से पानी आता है ? कुओं में ? ठीक ! भगवान् यहां तो कड़ते हैं, भाई ! जिसमें हो उसमें से निकले. प्राप्त की प्राप्ति है. है उसमें से आता है. कुओं में पानी हो तो अवेडा.. अवेडा क्या कड़ते हैं ? अवेडा कड़ते हैं ? बाहर निकलता है ना ? बाहर थोडा होज होता है ना ?

और पशु पीते हैं. पशु को पीने को कूओंमें से बाहर निकालते हैं ना ? हमारे यहाँ अवेडा कड़ते हैं, अवेडा. कूओं में है उसमें से पानी निकालकर, कुंडु डोती है कुंडी में (भरते हैं). कूओं में है वड कुंडी में आता है या कूओं में नहीं है और कुंडी में आता है ?

वैसे भगवानआत्मा अंतर अनंत गुण का बडा कूआं है. ऐसी अनंत गुण की बैली आत्मा है. गुण की बैली. आडा..डा..! जैसे की बैली में अज्ञानी को गुडगुडी डो जाती है. डीरा, माण्डके भरे डो तो आ..डा..डा.. (डो जाता है). मूढ है, धूल में क्या है ? ओ..ँ...! धूल में आत्मा कहां आया ? उससे आत्मा में क्या लाभ हुआ ? धूल धूल का काम करे, आत्मा भिन्न है.

यहां तो यड बताना है कि, आत्मा का सम्बन्धदर्शनरूपी कार्य, वड कार्य जिसमें श्रद्धागुण पडा है और श्रद्धागुण का धरनेवाला आत्मा है, उससे वड कार्य डोता है, दूसरे से डोता नहीं. भाई ! क्या सुन रहे डो ? पडवे न कडते थे. सुनते हैं और डोता है, ऐसा आप कडते थे. (गुरु से डोता है), ऐसा कडते थे. (वड) विपरीत था. समज में आया ? क्या तुम्हारी श्रद्धापर्याय जो अवस्था है वड गुरु में रडती है ? भगवान में रडती है ? तेरा गुण क्या भगवान में रडता है ? तेरा गुण तो तेरे आत्मा में अंदर है.

मुमुक्षु :- मडड करे.. मडड.

उत्तर :- मडड कैसी ?

भगवानआत्मा अक समय में पूर्ण गुण से भरा, जो शक्ति है उसमें से श्रद्धा आती है. उसका अंतरलक्ष करने से पर्याय प्रगट डोती है. बस ! दूसरा कोई उपाय है डी नहीं. यहां तो सम्यग्दर्शन का कारण डी सारा द्रव्य है. भूतार्थ वस्तु कारण है, दूसरा कोई कारण है नहीं. ऐसी सम्यग्दर्शन की पर्याय डो तब सम्यग्दर्शन को कारण कडने में आता है और बाड में साथ में सम्यग्ज्ञान डो उसे कार्य कडने में आता है. है तो अकसाथ-युगपद्. उसमें कारण-कार्य का भाव कडने में आता है. समज में आया ? देजो !

‘सम्यग्दर्शन श्रद्धागुण की शुद्धपर्याय है, और सम्यग्ज्ञान ज्ञानगुण की शुद्धपर्याय है.’ देजो ! तीसरी पंक्ति है. पंक्ति कडते हैं ना ? लाईन, तीसरी लाईन है, देजो ! ८५ (पन्ना) है ना ? ८५ पन्ना है. सम्यग्ज्ञान. आत्मा में ज्ञान, सारे यैतन्य में केवलज्ञान भरा है. केवलज्ञान यानी केवलपर्याय नहीं. केवल-ज्ञान, अेक ज्ञान, अेक ज्ञान, अेक ज्ञान त्रिकाल. द्रव्य त्रिकाल, ज्ञानगुण त्रिकाल. द्रव्य त्रिकाल, ज्ञानगुण त्रिकाल. उसके लक्ष्य से वर्तमान क्षणिक पर्याय उत्पन्न हो उसका नाम सम्यग्ज्ञान कडते हैं. सम्यग्ज्ञान ज्ञानगुण की पर्याय है. सम्यग्दर्शन श्रद्धागुण की पर्याय है, अेक समय में साथ में उत्पन्न होती हैं फिर भी श्रद्धागुण को कारण और ज्ञान को कार्य कडने में आता है. समज में आया ? क्यों (भाई) ? वड तो वकील है, वकील. दीमागवाला है ना ? अेल.अेल.जी. पास हुआ है. समज में आया ?

मुमुक्षु :- पैसा....

उत्तर :- पैसा का क्या काम है ? उसके पिताज्ज कडते हैं कि, भाई पैसा नहीं कमाता है. यहाँ आत्मा की पर्याय कमाने हो ना, भैया ! बाहर कमा सकते है कौन ? पूर्व का पुण्य हो तो आता है, पुण्य नहीं हो तो लाभ करोड (कुछ भी करो पैसा मिलता नहीं). ‘हुन्नर करो डजार, भाग्य बिन मिले नहीं’ अेक पैसा भी मिले नहीं. समज में आया ? कडो, बराबर डोगा कि नहीं ? भाई !

कडते हैं, ‘पुनश्च सम्यग्दर्शन का लक्षण...’ देजो ! ‘सम्यग्दर्शन का लक्षण विपरीत अभिप्रायरहित तत्त्वार्थश्रद्धा है...’ देजो ! दोनों के लक्षण भिन्न हैं. भगवानआत्मा की श्रद्धागुण की जो पर्याय सम्यक् पर्याय हुआ, जो शांति, आनंद के साथ हुआ, जो मोक्ष की पडली सीढी है, मोक्ष की पडली सीढी है, उसका लक्षण क्या ? विपरीत अभिनिवेश—विपरीत अभिप्रायरहित तत्त्वार्थश्रद्धान. उसमें सात तत्त्व की विपरीत श्रद्धा किंचित् रडती नहीं. सात तत्त्व, हां ! अज्ञानी अडेला आत्मा.. आत्मा करे, अैसा नहीं.

भगवान सर्वज्ञ परमेश्वर त्रिलोकनाथ वीतराग, जिनके मुज में सात तत्त्व आये, सात में जव और अजव हो द्रव्य हैं. जव और अजव हो द्रव्य हैं और पांच उसकी पर्याय हैं. पर्याय. सामान्य और विशेष. जव और अजव सात तत्त्व में

दो पदार्थ हैं और पांच उसकी विशेष दशा-अवस्था-छावत हैं. ऐसा सामान्य-विशेष मिलकर सात तत्त्व होते हैं. सामान्य-विशेष में विपरीत श्रद्धा बिना जो यथार्थ श्रद्धा है, उसे तत्त्वार्थश्रद्धान भगवान कहते हैं. समज में आया ? सामान्य और विशेष दूसरे में कहां है ? भाई ! ये सामान्य-सामान्य कहते हैं. सामान्य के साथ विशेष पर्याय है. श्रद्धा करना वह विशेष है, सम्यग्ज्ञान विशेष है, द्रव्य नहीं, गुण नहीं. आछा..छा...!

सात तत्त्व में आस्रव में पुण्य-पाप समा जाते हैं, तो नव कहते हैं. सात में भी जव और जड दो पदार्थ सामान्य वस्तु (हैं) और उसमें उसकी पांच पर्याय हैं. आस्रव, बंध. आस्रव में पुण्य-पाप आया. वह जव की विकारी पर्याय है. जड में जड की (पर्याय है). और संवर, निर्जरा, मोक्ष जव की निर्मल पर्याय विशेष है, निर्मल पर्याय विशेष है. संवर, निर्जरा शुद्ध पर्याय अपूर्ण है, मोक्षपर्याय शुद्ध पर्याय पूर्ण है. ऐसे सात तत्त्व जैसे हैं, ऐसी विपरीत श्रद्धारहित, विपरीत अभिप्रायरहित श्रद्धा करनी उसका नाम तत्त्वार्थश्रद्धान सम्यग्दर्शन का लक्षण है. यहां तो सम्यग्दर्शन का लक्षण बताते हैं ना ? सम्यग्ज्ञान का लक्षण दूसरा है, ऐसा कहते हैं. समज में आया ?

‘और सम्यग्ज्ञान का लक्षण...’ देजो ! ‘संशय आदि दोष रहित...’ यह दूसरा लक्षण (है). नीचे (फूटनोट में) है. ‘संशय, विमोह, अनिर्धार.’ है ? नीचे है, पडली पंक्ति है. संशय-सम्यग्ज्ञान में संशय नहीं होता. क्या (कहा) ? यह यांटी होगी या छीप ? छीप है या यांटी है ? मुझे पता नहीं. समज में आया ? कुछ मालूम नहीं. वह अनध्यवसाय है. यह तो यांटी को छीप मानना, छीप को यांटी ही मानना वह विपर्यासि छे. संशय (अर्थात्) कुछ होगा. होगा, अपने को कुछ मालूम नहीं. वह संशय है. ज्ञान में ऐसा संशय नहीं. विमोह नाम विभ्रम-विपर्यासि नहीं और अनिर्धार अनध्यवसाय नहीं. वह तो अर्थ किया है, विमोह की व्याख्या की है. कोष्ठक में शब्द हैं ना ? विमोह यानी विभ्रम और विपर्यय.

देजो ! सम्यग्ज्ञान कैसा होना चाडिये ? जिसमें संशय नहीं (होता). क्या है ? हमने आत्मा जाना है या नहीं जाना इसकी हमें जबर नहीं. लो, मूढ है. समज

में आया ? हमारे आत्मा में सम्यग्दर्शन हुआ है या नहीं, हमें मालूम नहीं पड़ता. (औसा) ज्ञान में संशय (होना). यह संशय तो अज्ञान है. अज्ञान में सम्यग्ज्ञान होता नहीं. सम्यग्ज्ञान नहीं है वहां सम्यग्दर्शन है ही नहीं. समज में आया ? क्या कड़ा ? संशय.. संशय. दो कोटिका का ज्ञान. छीप है या सोना ? छीप है या सोना ? छीप है या यांही ? हमें क्या पता ? हमारे अनंत भव जन्म-मरण भगवान ने देभे होंगे तो हमें क्या पता ? मूढ़ है. तेरा ज्ञान ही अज्ञान है. समज में आया? सम्यग्दृष्टि को सम्यग्ज्ञान में संशय नहीं होता. मेरे अनंत भव होंगे ? समज में आया ? तो सम्यग्ज्ञान है ही नहीं. सम्यग्ज्ञान सम्यग्दर्शन के साथ होता है. सम्यग्ज्ञान में संशय होता नहीं. क्या होगा ? भगवान ने हमारे अनंत भव देभे होंगे. समज में आया ? मूढ़ है, तेरा ज्ञान ही अज्ञान है, तेरी श्रद्धा ही मिथ्यात्व है. भगवान की श्रद्धा तुने की ही नहीं. ओ..ँ...!

मुमुक्षु :- द्रव्यविंगी मुनि..

उत्तर :- द्रव्यविंगी मुनि को अंदर तीनों होते हैं. संशय में थोड़ा स्पष्ट करते हैं ना. समज में आया ? ये ज्ञान के दोष हैं. जहां संशय है वहां सम्यग्ज्ञान नहीं. तो जहां सम्यग्ज्ञान नहीं है वहां सम्यग्दर्शन भी नहीं है. सम्यग्दर्शन है वहां सम्यग्ज्ञान है और सम्यग्ज्ञान है वहां संशय नहीं होता. समज में आया ? यह तो समज में आता है या नहीं ? भाई ! थोड़ा.. थोड़ा. ठीक है. आज तो बहुत सूक्ष्म बात आयी है. 'कलकत्ता' में व्यापार में सब समज में आता है, ये तो कभी-कभी सुनने मिलता है. आहा..हा..! अरे..! भगवान ! तेरे घर की तेरी बात है, यह तो तेरे घर की बात है.

यहां तो कहते हैं कि, ज्ञान का दोष भिन्न है. दर्शन का गुण भिन्न है, ज्ञान का गुण भिन्न है. दर्शन (तो) विपरीत अभिप्रायरहित तत्त्वार्थश्रद्धान, बस ! एतना. ज्ञान में संशय नहीं. संशय नहीं, संदेह नहीं. संदेह नहीं कि, मैंने आत्मा का ज्ञान किया है या मुझे उसका ज्ञान नहीं है ? यह तो संशय है. समज में आया ? सूक्ष्म बात है. औसा जहां ज्ञान में संशय है वहां सम्यग्दर्शन है ही नहीं. सम्यग्दर्शन का कार्य सम्यग्ज्ञान है, उस सम्यग्ज्ञान में संशय होता ही नहीं. क्या कड़ा ? भाई !

ક્યા કહા સમજે ?

ભગવાનઆત્મા વસ્તુ અખંડાનંદ પ્રભુ, ઉસકી પ્રતીત-શ્રદ્ધા સમ્યક્ હુઈ તો સમ્યગ્દર્શન મેં કારણ આત્મા હુઆ ઔર કારણ હુઆ તો સમ્યગ્દર્શન કી પર્યાય ઉસકી કાર્ય હુઈ. સમ્યગ્દર્શન મેં સારા આત્મા હી પ્રતીત મેં-શ્રદ્ધા મેં આયા. ઐસી શ્રદ્ધા કે સાથ જો જ્ઞાન હુઆ ઉસમેં સંશય નહીં રહતા. સારા દ્રવ્ય ભવરહિત હૈ, સ્વભાવ ભવરહિત, રાગરહિત હૈ. રાગ ઔર વિકલ્પ સે રહિત મેરા સારા આત્મા હૈ, ઐસે જબ દ્રવ્ય કો કારણ બનાકર સમ્યગ્દર્શન હુઆ તો સમ્યગ્જ્ઞાન મેં સંશય નહીં. મેરે અનંત ભવ હોંગે યા નહીં ? અનંત ક્યા, ભવ હી મેરે મેં નહીં હૈ. આહા..હા...! સમજ મેં આયા ? ભવ તો વિકાર કા ફલ હૈ, ભવ તો વિકાર કા ફલ હૈ. વિકાર મેરે મેં નહીં, ઐસી દષ્ટિ હોકર તો સમ્યગ્દર્શન હુઆ હૈ. ભાઈ ! આહા..હા...! યે થોડી સૂક્ષ્મ બાત આવી હૈ.

મુમુક્ષુ :- બહુ સરસ આવી.. ગુજરાતીમાં ફરી સંભળાવજો.

ઉત્તર :- ના, હિન્દી મેં ઠીક ચલ રહા હૈ. સેઠ આયે હેં, સેઠ થોડા સુને તો સહી. મુશ્કિલ સે લાયે હેં, (યહ મુમુક્ષુ) લાયે હેં. થોડી ઉદારતા રખની. પૂરી જિંદગી મેં અભી આયે હેં. યહાં (એક મુમુક્ષુ) રહતે હેં તો ચલો, ચલતે હેં. ઇસલિયે થોડા હિન્દી (લિયા), ગુજરાતી તો સમજે નહીં. સમજ મેં આયા ? યહ તો ગુજરાતી જૈસી હી ભાષા હૈ. આપ જૈસી હિન્દી બોલતે હો વૈસી હમારી હિન્દી નહીં હૈ. સમજ મેં આયા ? ભાઈ ! યે લોગ હિન્દી બોલે ઐસી હિન્દી નહીં હૈ. યે લોગ જબ બોલતે હેં તબ લગે કિ, ગડબડ જૈસી લગતી હૈ. યહાં તો સાધારણ કામચલાઉ હિન્દી હોતા હૈ. કામચલાઉ. સમજ મેં આયા ? ક્યા કહા ?

સંશય. સમ્યગ્જ્ઞાન મેં ક્યા કહા ? દેખો ! 'સંશય આદિ દોષ રહિત સ્વ-પર કા યથાર્થતયા નિર્ણય...' ઇસમેં સે અબ નિકાલના હૈ. ક્યા ? કિ, સ્વ નામ આત્મા. જ્ઞાનાનંદ સ્વરૂપ મેં હૂં, ઐસી પ્રતીત હુઈ. ઉસકે સાથ જ્ઞાન હુઆ. ઔર પર. યહાં તો સ્વ-પર હૈ ના ? દો હૈ ના ? જ્ઞાન હૈ કિ નહીં ? અપના જ્ઞાન હુઆ તો ઉસકે સાથ રાગ, શરીર આદિ અલ્પ હૈ, બસ ઇતના. અનંત ભવ હૈ ઐસા રાગ નહીં. અનંત ભવ હૈ, ઐસા કર્મ નહીં. જ્ઞાન મેં ઐસી પર કી અસ્તિત્વતા, રાગ કી ઔર

कर्म की अस्तित्वता उसमें है, मेरे में नहीं. स्व का और पर का ऐसा निःसंशय ज्ञान (हुआ) उसे सम्यग्ज्ञान कहते हैं. क्या आया ? थोड़ी सूक्ष्म (बात) आयी है तो थोड़ा अधिक (स्पष्टीकरण) करेंगे. क्या कहा ?

आत्मा अपना पूर्ण शुद्ध स्वरूप श्रद्धा में सम्यक् में लिया तो उसके सम्यग्ज्ञान हुआ. श्रद्धा में तो अत्मेह है. अब ज्ञान में स्व-पर (है). पहले आ गया था. उसमें ऐसा था ना ? देखिये ! 'स्व-पर अर्थ बहुत धर्मशुत' दूसरी पंक्ति.

सम्यक् श्रद्धा धारि पुनि, सेवहु सम्यग्ज्ञान;

स्व-पर अर्थ बहुत धर्मशुत, जो प्रगटावन भान. १.

नीचे भी 'प्रमेयरत्नमाला' का दिया है ना ? 'स्वापूर्वार्थव्यदसायात्मकं' भाई ! 'स्वापूर्वार्थव्यदसायात्मकं' बराबर है ? अब उसमें से निकालना है. क्या निकालना है ? देखो ! स्व और पर. अपना आत्मा अत्मेह शुद्ध अखंड ज्ञान, दर्शन में प्रतीत हुआ तो उसके साथ ज्ञान (भी हुआ). उसमें (—श्रद्धा में) तो अत्मेह की प्रतीत हुई. अब ज्ञान हुआ. सम्यग्दर्शन कारण, ज्ञान कारण. निश्चय से तो आत्मा कारण है, ज्ञान कार्य है. लेकिन पर्याय में सम्यग्दर्शन कारण और ज्ञान कार्य. ये सम्यग्ज्ञान कैसा है ? संशय बिना का. यह स्व-पर का ज्ञान है. कैसा ? कि, स्व — मैं अखंड शुद्ध हूँ, मेरी छतनी निर्मल पर्याय प्रगट हुई है और भविन आदि पर्याय अल्प है, कर्म का संबंध भी अल्प रहा. कैसा ? कि, मेरे अनंत भव हैं, ऐसा भाव नहीं. अनंत भव है ऐसा कर्म का निमित्त नहीं. समज में आया ?

अनंत भव का अभावस्वभावरूप भगवानआत्मा, यह आत्मा. देखो ! यहाँ सात तत्त्व की श्रद्धा में निकालते हैं. सम्यग्दर्शन में आत्मा की प्रतीति हुई, पर्याय में भान हुआ. साथ में ज्ञान ऐसा होता है — 'स्वापूर्वार्थव्यदसायात्मकं'. स्व—मैं शुद्ध हूँ, मेरी पर्याय भी संवर, निर्जरा आदि शुद्ध हुई है और रागादि थोड़े हैं और कर्मादि हैं उसका ज्ञान है. पर यह ज्ञान कैसा है ? कि, यह ज्ञान ऐसा मानता है कि, मुझे भव ही नहीं. स्वभाव में नहीं है तो मेरे भव नहीं है. अब रागादि अल्प रहे हैं यह अनंत भव का कारण नहीं है. अकाह भव का कारण (है) लेकिन यह तो ज्ञान में पर का निश्चय आ गया. पर का निश्चय आ गया कि राग है,

કર્મ હૈ, બસ, ઇતના. પર હૈ, ઇતના. પરંતુ યે પર મેરે સે પૃથક્ હૈં. મુજે ભવ કે અભાવભાવરૂપ સ્વભાવ કી પ્રતીતિ હુઈ તો જ્ઞાન ભી (ઐસા હુઆ કિ), મુજે ભવ હૈ હી નહીં ઓર અલ્પ રાગાદિ હૈ ઉસમેં રાગ મેં, પચીસ-પચાસ ભવ કર દે, ઐસી રાગ કી તાકત નહીં હૈ. કર્મ મેં-નિમિત્ત મેં ભી પચીસ-પચાસ ભવ કર દે, ઐસી કર્મ મેં-નિમિત્ત મેં તાકત નહીં હૈ. સમજ મેં આયા ? કઠિન બાત હૈ, ભાઈ ! એ..ઇ...!

‘સ્વાપૂર્વાર્થ’ કહા ના ? ભાઈ ! વસ્તુ કે જ્ઞાન મેં ઐસા આ ગયા. રાગ મેરા નહીં, કર્મ મેરા નહીં. ઓર (બાકી) રહા ઉસમેં ઇતની તાકત નહીં કિ, મેરે મેં તીવ્ર વિકાર હો, ઉસમેં નિમિત્ત મેં ઐસી તાકત નહીં. સમજ મેં આયા ? અનંતાનુબંધી કા તીવ્ર રાગ હૈ ઉસમેં નિમિત્ત હો ઐસા કર્મ નહીં, યહાં અનંતાનુબંધી કા વિકાર નહીં. સમજ મેં આયા ? આહા..હા...! કઠિન બાત હૈ, ભાઈ ! સમજ મેં આયા ? નયી (બાત) આયી. ભગવાન...! (બાત તો) આતે-આતે આતી હૈ.

યહાં જ્ઞાન કા લક્ષણ સંશય રહિત. આત્મા કા શ્રદ્ધા કા લક્ષણ વિપરીત અભિપ્રાયરહિત. વિપરીત અભિપ્રાયરહિત ઐસા ભગવાનઆત્મા (હૈ) ઐસી શ્રદ્ધા હુઈ તો જ્ઞાન ભી ઐસા હુઆ. સ્વ કા યથાર્થ, પર કા યથાર્થ. યથાર્થ નામ રાગ હૈ, ઇતના બંધ કા કારણ હૈ. લેકિન બંધ કા કારણ કિતના અલ્પ રહા હૈ ? કિ, અલ્પ એકાદ ભવ આદિ હો ઇતના બંધ કા કારણ રાગ રહા હૈ. કર્મ ભી ઇતને હી રહે હૈં. ઐસી પ્રતીત વર્તમાન મેં હૈ. ભવિષ્ય મેં કોઈ ઐસા આ જાયેગા (તો) ? ઐસા હૈ હી નહીં. મેરે ઇતને જોરદાર કર્મ આ જાયે તો ? (ઐસા સંશય હોતા હૈ તો) તુજે સમ્યક્ જ્ઞાન હી નહીં હૈ. બરાબર હૈ ? ન્યાય સે હૈ કિ નહીં ? લોજક સે હૈ કિ નહીં ? આહા..હા...!

દેખો ! કયા કહતે હૈં ? માત્ર લક્ષણ કા ફર્ક હૈ. લેકિન સ્વ-પર કા જ્ઞાન હૈ. ઉસમેં સ્વ કી અંતર પ્રતીતિ હૈ. ઇસમેં સ્વ-પર કા જ્ઞાન (હૈ). જ્ઞાન મેં ઐસા નહીં આતા હૈ કિ, ઇતના રાગ મેરા હૈ કિ જિસમેં અનંત ભવ કરને કી તાકત હૈ. ઐસા રાગ ઉસકે પાસ હૈ હી નહીં. ઓર નિમિત્ત મેં કર્મ કે - અજીવ કે સંયોગ મેં કર્મ કી ઐસી તાકત નહીં હૈ. ઐસા માનતે હૈં કિ, મેરે મેં તો યહ હૈ હી નહીં. મેરી ચીજ મેં તો નહીં હૈ, કિન્તુ ઉસમેં હૈ. નિમિત્ત હોકર યહાં અશુદ્ધ ઉપાદાન મેં તીવ્ર

डो, औसी बात उसमें है नहीं, मेरे में है नहीं. समज में आया ? यड बात नयी निकली. देओ ! निकल जाये तो छिन्दी में निकल जाये. नहीं निकले तो गुजराती में भी नहीं निकले. कडो !

‘सम्यग्ज्ञान का लक्षण संशय...’ विमोड-विपरीत नहीं. देओ ! संशय नहीं, विपरीत नहीं. विपरीत-उलटा ज्ञान नहीं. जैसा है वैसा ही उसका ज्ञान है. जैसा है वैसा ही है. विपरीत ज्ञान नहीं. विपरीत का अर्थ क्रिया - विभ्रम और विपर्यय. समजे ? और तीसरा अनिर्धार है ना ? अनध्यवसाय. उसका अर्थ अनिर्धार. मुजे मालूम नहीं है, भैया ! मुजे अनंत भव होंगे या नहीं होंगे, मुजे मालूम नहीं पडता. औसा ज्ञान सम्यग्ज्ञानी का होता नहीं. आछा..छा...! समज में आया ? ज्ञान में एतनी ताकत है. अपना स्वरूप भव-विकार रडित का भान, श्रद्धा छुई. ज्ञान भी औसा छुआ कि, स्व तो विकाररडित, भवरडित, भव के भावरडित वस्तु है. और थोडा राग रडा वड भी एतना रडा, भव के अभाव का श्रद्धा और ज्ञान छुआ तो राग एतना रड गया है कि, उसमें अनंत भव डो या अनंत जन्म-मरण डो, औसा राग या कर्म उसमें है नहीं. औसा स्वसडित पर की श्रद्धा, पर का ज्ञान सम्यग्ज्ञानी को संशयरडित, विपर्ययरडित, अनिर्धाररडित (डोता है). अनिर्धाररडित (अर्थात्) निर्धारित डोता है. समज में आया ? अरे..! भाई ! आत्मा की श्रद्धा और आत्मा का ज्ञान किसे कडते हैं ? ये लावापेका है ? लोक में भी जो समजते हैं उसमें उसे संशय डोता है ? बराबर है, डमारा ज्ञान डमारा है, डम बराबर जानते हैं (औसा कडते हैं). जिसे व्यापार डोता है, जिसकी वकालत डो, डोक्टर डो, बाडर का व्यापार डो, ये मकान का धंधा डो (उसमें) शंका डोती है ? २२ मजले का मकान करते थे. (उनकी) दुकान में पगला करने गये थे (तब कडते थे), ये डमारा २२ मजले का मकान का धंधा है, उसका नकशा है. नकशा टिभाते हैं, डमारे पास माल नहीं, नकशा बताते हैं. समज में आता है ? उसे शंका डोती है ? डम जो धंधा करते हैं उसमें बराबर झयदा करेंगे. (औसा) माने. फिर भी पुष्ट्य डो तो आये, पुष्ट्य नहीं डो तो न आये.

यहां तो भगवानआत्मा.. देओ ! यहां सम्यग्ज्ञान-आत्मा का ज्ञान, उसका

नलड ऒलन कडते हैं. ंस ऒलन डें तीन ढोष है नडीं. 'स्व-डर कल डथलरुथडतल नलरुडड है-ँस डुरकलर ढोनूं के लकुषल डलनन-डलनन हैं.' ंसलडडे शुरदुडल कल आरलधन करके, सडुडगऒलन कल आरलधन करनल डड ंसकल तलतुडरुड है. वलशेष कडेंगे...

(शुरीतल :- डुरडलषल वरुडन गुरुदुडेव !)

